

॥ अथ चन्द्रशेखराष्टकम् ॥

चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर पाहिमाम् ।

चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्षमाम् ॥ १॥

रत्नसानुशरासनं रजतादिशृङ्गानिकेतनं

सिञ्जिनीकृतपन्नगेश्वरमभ्युत्ताननसायकम् ।

क्षिप्रदधपुत्रयं त्रिदिवालयैभिवन्दितं

चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ॥ २॥

पद्मपादपपुष्पगन्धपटाम्बुजदूयशोभितं

भाललोचनजातपावकदग्धमन्मथविग्रहम् ।

भस्मदिग्धकलेवरं भवनाशनं भवमव्ययं

चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्षमाम् ॥ ३॥

मत्वारणामुप्ययर्मकृतोत्तरीमनोहरं

पङ्कजासनपद्मलोचनपुञ्जिताङ्घ्रिसरोरुहम् ।

देवसिन्धुतरङ्गसीकर सिक्तरुभ्रजटाधरं

चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्षमाम् ॥ ४॥

यक्षराजसप्तं भगाक्षहरं भुजङ्गविभूषणं

शैलराजसुता परिष्कृत चारुवामकलेवरम् ।

क्ष्वेदनीलगलं परश्वधधारिणं मृगधारिणं

चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्षमाम् ॥ ५॥

कुण्डलीकृतकुण्डलेश्वरकुण्डलं वृषवाहनं

नारदादिमुनीश्वरस्तुतवैभवं भुवनेश्वरम् ।

अन्धकान्धकामा श्रिता मरपादपं शमनान्तकं

चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्षमाम् ॥ ६॥

भषजं भवरोगिणामजिलापटामपहारिणं

दक्षयज्ञर्विनाशनं त्रिगुणात्मकं त्रिविलोचनम् ।

मुक्तिमुक्तकलप्रदं सकलाधसङ्घनिवर्हनं

चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्षामाम् ॥ ७॥

भक्त वत्सलमयितं निधिमक्षयं हरिदम्बरं

सर्वभूतपतिं परात्पर प्रमेयमनुत्तमम् ।

सोमवारिष्ठ (मूहुताशनसोमपानिलजाकृतिं

चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्षामाम् ॥ ८॥

विश्वसृष्टिविधातिनं पुनरेव पालनतत्परं

संहरन्तमपि प्रपञ्चम शेषलोकनिवासिनम् ।

छिद्यन्तमहर्निशं गणनाथयूथ समन्वितं

चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्षामाम् ॥ ९॥

मृत्युभीतमृकण्डसूनुकृतस्तव शिव सन्निधौ

यत्र कुत्र च पठेन्नहि तस्य मृत्युभयं भवेत् ।

पूर्वामायुरशोगितामजिलाथ सम्पदमाहरं

चन्द्रशेखर अथ तस्य ददाति मुक्तिमयत्नतः ॥ १०॥

॥॥ इति चन्द्रशेखराष्टकम्॥